हिन्दुस्तान

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को चुनौती नहीं, अवसर के रूप में लें

कुलपति बोले

सरिया, प्रतिनिधि। झारखंड राज्य उच्च शिक्षा परिषद एवं उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, झारखंड सरकार के बैनर तले शनिवार को सरिया कॉलेज में भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच सामंजस्य चुनौती एवं अवसर विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन हुआ।

शनिवार को सेमिनार में शामिल मुख्य अतिथि और उपस्थित लोग।

04 तकनीकी सत्र में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के आयामों पर चर्चा हुई

- बीएचयू, मगध, दिल्ली, बिनोवा भावे यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधि हुए शामिल
- सरिया कॉलेज सरिया में एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

कार्यक्रम का उद्घाटन विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग के कुलपति प्रो. (डॉ.) चंद्रभूषण शर्मा ने किया। उनके साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में बगोदर विधायक नागेंद्र महतो, पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह, प्राचार्य डॉ. संतोष कुमार लाल और शासी निकाय सदस्य राजेश कुमार जैन उपस्थित रहे। अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। प्राचार्य डॉ. संतोष कुमार लाल ने मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. चंद्रभूषण को अंगवस्त्र, पौधा और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। वहीं सचिव ने विधायक नागेंद्र महतो को और विभागाध्यक्ष प्रो. अरुण कुमार ने पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह को सम्मानित किया। स्वागत गीत के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने अतिथियों का अभिनंदन किया। अपने सम्बोधन में बिनोवा भावे के कुलपति प्रो. चंद्रभूषण ने कहा कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। नालंदा विश्वविद्यालय इसका प्रमाण है, जिसकी ख्याति पूरी दुनिया में थी। उन्होंने कहा कि आज भी यूरोप भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति से सीख लेकर उसका उपयोग कर रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा को चुनौती नहीं बल्कि अवसर के रूप में लेना चाहिए। साथ ही उन्होंने सरकार से विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शीघ्र प्रोफेसरों की बहाली की अपील की।

विधायक नागेंद्र महतो ने कहा कि प्राचीन शिक्षा पद्धति को आत्मसात करने से ही विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव है। ज्ञान सबसे बड़ी पूंजी है, इसे लगातार अर्जित करते रहना चाहिए। पूर्व विधायक विनोद सिंह ने कहा कि भारतीय परंपराएं गौरवशाली रही हैं। प्राचीन शिक्षा की वैज्ञानिक पद्धति को वर्तमान में अपनाने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थियों का बहुआयामी विकास हो सके।

उद्घाटन सत्र के बाद चार तकनीकी सत्र में विभिन्न वक्ताओं ने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों पर प्रकाश डाला। संचालन डॉ. आशीष सिंह और प्रो. अलका रानी ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. श्वेता ने किया। मौके पर वक्ता के रूप में दक्षिण बिहार केंद्रीय विवि गया के डॉ. सनत कुमार शर्मा, बीएचयू की डॉ. प्रियंका झा, नई दिल्ली के डॉ. मृत्युंजय त्रिपाठी तथा विनोबा भावे विवि के मानव शास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद रंजन उपस्थित रहे। गिरिडीह कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अनुज कुमार, आर.एन.वाई.एम. कॉलेज बरही के डॉ. विमल किशोर, लंगटा बाबा कॉलेज मिर्जागंज के डॉ. कमल नयन सिंह, वनांचल कॉलेज टंडवा के डॉ. संजय नारायण दास, पंडित नेहरू मेमोरियल कॉलेज गोमो के डॉ. डोमन हजाम, झारखंड कॉलेज डुमरी के डॉ. सुजीत माथुर और पारसनाथ कॉलेज के डॉ. मनोज मिश्रा सहित कई प्राचार्यों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। संगोष्ठी में झारखंड, बिहार, हरियाणा, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक से. रविंद्र कुमार मिश्रा, डॉ. प्रमोद कुमार, प्रो. आसित दिवाकर, प्रो. यशवंत सिंहा, प्रो. जितेंद्र कुमार, डॉ. अजय रंजन, प्रो. राजीव सहित दर्जनों शिक्षकों, शोधार्थियों और छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

दैनिक भास्कर गिरिडीह 14-09-2025

सरिया कॉलेज में एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार संपन्न, स्वागत गीत से किया अतिथियों का अभिनंदन

हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा समृद्ध व उन्नत : डॉ. चंद्रभूषण

सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय सेमिनार में मंचासीन आतिथि।

सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय सेमिनार में उपस्थित लोग।

भास्कर न्यूज | सरिया

सरिया कॉलेज में शनिवार को राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. चंद्रभूषण शर्मा, विधायक नागेंद्र महतो, पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह, सचिव मनोहर सिंह बग्गा, प्राचार्य डॉ. संतोष कुमार लाल व शासी निकाय सदस्य राजेश कुमार जैन ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।

प्राचार्य डॉ. संतोष कुमार लाल ने मुख्य अतिथि कुलपति को अंग वस्त्र, पौधा और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। कॉलेज सचिव ने विधायक नागेंद्र महतो को तथा राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. अरुण कुमार ने पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह को सम्मानित किया। कार्यक्रम की शुरुआत में कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर अतिथियों का अभिनंदन किया। स्वागत भाषण में प्राचार्य डॉ. संतोष कुमार लाल ने बताया कि यह सेमिनार झारखंड राज्य उच्च शिक्षा परिषद एवं उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, झारखंड सरकार के तत्वाधान में आयोजित किया गया है।

मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. शर्मा ने कहा कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध और उन्नत रही है। नालंदा विश्वविद्यालय जैसे विश्वविख्यात संस्थान इसका प्रमाण हैं। उन्होंने उपस्थित शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों से कहा कि इस परंपरा को चुनौती के रूप में न देखकर अवसर के रूप में अपनाना चाहिए।

शिक्षा क्षेत्र में सुधार के लिए उन्होंने महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में प्रोफेसरों की बहाली शीघ्र करने की अपील की।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली को आत्मसात करना आवश्यक, ज्ञान सबसे बड़ी पूंजी : नागेंद्र

विशिष्ट अतिथि विधायक नागेंद्र महतो ने कहा कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली को आत्मसात करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो। उन्होंने कहा कि ज्ञान ही सबसे बड़ी पूंजी है, जिसे निरंतर बढ़ाना चाहिए।

पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह ने भी प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली की वैज्ञानिक दृष्टि की सराहना की और कहा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास हो।

सेमिनार को इन्होंने भी किया संबोधित

रिसोर्स पर्सन के रूप में दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. सनत कुमार शर्मा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की डॉ. प्रियंका झा, सी.सी.डी.सी. नई दिल्ली के डॉ. मृत्युंजय त्रिपाठी एवं विनोबा भावे विश्वविद्यालय के मानव शास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद रंजन ने महत्वपूर्ण विचार साझा किए। कार्यक्रम में झारखंड, बिहार, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों से शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं भी शामिल हुए। साथ ही गिरिडीह कॉलेज, आरएनवाईएम कॉलेज बरही, लंगटा बाबा कॉलेज मिर्जागंज, वनांचल कॉलेज टंडवा, पंडित नेहरू मेमोरियल कॉलेज गोमो, झारखंड कॉलेज डुमरी सहित कई अन्य महाविद्यालयों के प्राचार्य उपस्थित रहे।

प्राचीन भारतीय परंपरा पर साझा किए विचार

सेमिनार के उद्घाटन के बाद चार सत्रों में विभिन्न विशेषज्ञों ने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशीष कुमार सिंह और प्रो. अलका रानी जोजो ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. श्वेता ने प्रस्तुत किया।

ज्ञान परंपरा व आधुनिक शिक्षा संगम पर मंथन

सरिया कालेज में राष्ट्रीय सेमिनार में विनोबा भावे विवि के कुलपति ने कहा -ज्ञान परंपरा भारत का धरोहर

संवाद सहयोगी, जागरण● सरिया (गिरिडीह) : शनिवार को सरिया कालेज में भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच सामंजस्य : चुनौती और अवसर विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डा. चंद्रभूषण शर्मा, बगोदर विधायक नागेंद्र महतो, पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह, सचिव मनोहर सिंह बग्गा, प्राचार्य डा. संतोष कुमार लाल तथा शासी निकाय सदस्य राजेश कुमार जैन ने संयुक्त रूप से किया। प्राचार्य डा. लाल ने मुख्य अतिथि कुलपति का, जबकि सचिव ने विधायक को तथा प्रो. अरुण कुमार ने पूर्व विधायक को सम्मानित किया।

कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि भारत की प्राचीन कालीन ज्ञान परंपरा विश्व में अद्वितीय रही है। नालंदा विश्वविद्यालय इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसका प्रभाव आज भी यूरोप तक दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि इस परंपरा को चुनौती नहीं बल्कि अवसर के रूप में लेना चाहिए। साथ ही सरकार से विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शीघ्र प्रोफेसर नियुक्ति की अपील की।विधायक नागेंद्र महतो ने विद्यार्थियों से ज्ञान को सबसे बड़ी पूंजी मानकर निरंतर आत्मसात करने की बात कही। वहीं पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय परंपरा गौरवशाली रही है और इसकी वैज्ञानिक पद्धति को आज की शिक्षा में समाहित करना जरूरी है। उद्घाटन के बाद चार सत्रों में देशभर के विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। वक्ताओं में दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय गया के डा. सनत कुमार शर्मा, बीएचयू वाराणसी की डॉ. प्रियंका झा, सीसीडीसी नई दिल्ली के डा. मृत्युंजय त्रिपाठी और विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग के मानवशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद रंजन शामिल थे। संगोष्ठी में गिरिडीह, बरही, मिजांगंज, टंडवा, गोमो, डुमरी और पारसनाथ कालेजों के प्राचार्यों ने भागीदारी की। इसके अलावा विभिन्न राज्यों से प्रो. रघुनंदन हजाम, प्रो. कार्तिक प्रसाद यादव, प्रो. रविंद्र कुमार मिश्रा, डा. प्रमोद कुमार, प्रो. संजय बक्शी, डा. अजय रंजन सहित कई शिक्षाविद शामिल हुए।

समापन सत्र में डा. आशीष कुमार सिंह व प्रो. अलका रानी जोजो ने संचालन किया और कार्यक्रम की समन्वयक डा. श्वेता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

शुक्रवार को संगोष्ठी में पुस्तक विमोचन करते अतिथि व अन्य ● जागरण

कार्यक्रम में हिस्सा लेते भारत के विभिन्न राज्यों के शोधकर्ता व विद्वान ● जागरण

झारखंड राज्य उच्च शिक्षा परिषद व तकनीकी शिक्षा विभाग के बैनर तले हुआ सेमिनार

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को चुनौती देने के बजाय अवसर के रूप में लें : प्रो चंद्रभूषण

प्रतिनिधि, सरिया

सरिया महाविद्यालय सरिया में शनिवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया. उद्घाटन विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो डॉ चंद्रभूषण शर्मा, विशिष्ट अतिथि बगोदर के विधायक नागेंद्र महतो, पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह, सचिव मनोहर सिंह बग्गा, प्राचार्य डॉ संतोष कुमार लाल, शासी निकाय सदस्य राजेश कुमार जैन आदि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया. कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने अतिथियों के स्वागत में स्वागत गीत की प्रस्तुति दी. वहीं प्राचार्य डॉ संतोष कुमार लाल ने स्वागत भाषण में कहा कि यह सेमिनार झारखंड राज्य उच्च शिक्षा परिषद, उच्च शिक्षा, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग झारखंड सरकार के द्वारा आयोजित की गई है जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच सामंजस्य के बीच चुनौती एवं अवसर विषय पर आयोजित की गई है.

मुख्य अतिथि कुलपति प्रो भूषण ने कहा कि भारत की प्राचीन कालीन ज्ञान परंपरा काफी उन्नत एवं समृद्ध रही है. प्राचीन काल में नालंदा विश्वविद्यालय विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता था. आज भी यूरोप के लोग भारत से सीखे प्राचीन ज्ञान परंपरा का उपयोग अपने शैक्षणिक कार्यों में कर रहे हैं. कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को चुनौती के रूप में नहीं, बल्कि अवसर के रूप में लेना चाहिए. विशिष्ट अतिथि बगोदर के विधायक नागेंद्र महतो ने कहा कि हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को आज के दौर में विद्यार्थियों को आत्मसात करने की आवश्यकता है. तभी विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सकेगा. विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक विनोद कुमार सिंह ने कहा कि भारत की प्राचीन परंपराएं गौरवशाली रही है. प्राचीन कालीन ज्ञान परंपरा के वैज्ञानिक पद्धति को आज के दौर में अपनाने की आवश्यकता है. कहा कि शिक्षा पद्धति ऐसी हो जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो. कार्यक्रम का संचालन डॉ आशीष कुमार सिंह तथा प्रो अलका रानी जोजो, वहीं धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम के समन्वयक डॉ श्वेता ने की.

सेमिनार में उपस्थित अतिथि.

रिसोर्स पर्सन के रूप ये थे शामिल : एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में वक्ता के रूप में दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय गया के डॉ सनत कुमार शर्मा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी की डॉ प्रियंका झा, सी. सी. डी. सी. नई दिल्ली के डॉ मृत्युंजय त्रिपाठी तथा विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग के मानव शास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ विनोद रंजन शामिल थे. सभी वक्ताओं ने भारत के प्राचीन ज्ञान परंपरा के बारे में जानकारियां लोगों के बीच चार सत्रों में साझा की. इस संगोष्ठी में गिरिडीह कॉलेज के प्राचार्य डॉ अनुज कुमार, आरएनवाईएम कॉलेज बरही के डॉ विमल किशोर, लंगटा बाबा कॉलेज मिर्जागंज के प्राचार्य डॉ कमल नयन सिंह, वनांचल कॉलेज टंडवा के प्राचार्य संजय नारायण दास, पंडित नेहरू मेमोरियल कॉलेज गोमो के डॉ डोमन हजाम, झारखंड कॉलेज डुमरी के प्राचार्य डॉ सुजीत माथुर, पारसनाथ कॉलेज के प्राचार्य डॉ मनोज मिश्रा, प्रो रघुनंदन हजाम, प्रो कार्तिक प्रसाद यादव, प्रो अरुण कुमार, प्रो रविंद्र कुमार मिश्रा, डॉ प्रमोद कुमार, प्रो चायरा निशा आईद, प्रो आसित दिवाकर, प्रो जितेंद्र कुमार, डॉ अरुणा, डॉ बी डी मोदी, डॉ अजय रंजन, प्रो संजय बक्शी, प्रो यशवंत सिन्हा, डॉ पिंटू पांडेय, प्रो रंजन कुमार, प्रो राजकुमार, डॉ शशि भूषण, प्रो डेगलाल महतो, प्रो महेंद्र ठाकुर, प्रो विनोद कुमार अकेला, प्रो जागेश्वर यादव, प्रो घनश्याम प्रो राजेश, कुमारी भारती, प्रो राजीव समेत झारखंड -बिहार, हरियाणा ,आंध्र प्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों से शिक्षक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राओं मिश्रा ने भाग लिया.